# प्रतिक्रियाएं

# जल चेतना

डॉ.ओ.पी.जोशी
(पूर्व प्रचार्य)
गुजराती साइंस कॉलेज
नसीया रोड,
इन्दौर, (म.प्र) - 452001o

धरती के घावों को पेड़ों से भर दो !

निवास - 54, मधुबन कालोनी
केसर बाग रोड, इन्दौर- 452009
फोन : 0731-2478672

25/12/2015

सम्पादकजी,

जल चेतना तकनीकी पत्रिका का अंक 02 जुलाई 2015 भेजने हेतु बहुत बहुत धन्यवाद एवं आभार। अंक मे प्रकाशित जानकारी ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। आपको एवं संस्था के अन्य लोगो को नए वर्ष 2016 की बधाई एवं शुभकामनाएं। पुनः धन्यवाद

[signature]

---

09461591498
dileepkailash@gmail.com

दिलीप भाटिया
रावतभाटा- 323307.
(राजस्थान)
| जनवरी 2016

रमा दीदी - प्रणाम

"जल-चेतना" - जुलाई 2015 अंक प्राप्त हुआ। आभार।
उत्कृष्ट रचनाओं के संकलन संपादन हेतु साधुवाद।
" जहाँ भी जाएगी, जल बचाएगी।
जल-चेतना पत्रिका अपना धर्म निभाएगी।"
मार्गदर्शन - स्नेह बनाए रखिएगा। अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी-

सादर सस्नेह - एक पाठक -
दिलीप

---

राशिद जमाल फारूकी
सी- 1452, आई॰ डी॰ पी॰ एल॰ टाउन शिप
वीरभद्र (ऋषिकेश) देहरादून (यू.के.)
249202

मान्यवर !

आदाब ! आशा है आप सकुशल होंगे। मैं अंग्रेजी साहित्य का सेवा निवृत्त अध्यापक हूँ। हिन्दी, अंग्रेजी व उर्दू के साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में मेरी रचनाएं प्रकाशित होती हैं। आकाशवाणी व दूरदर्शन पर प्रसारण भी। मैंने आपकी अत्यन्त उपयोगी पत्रिका का एक पुराना अंक देखा, मैं बहुत प्रभावित हुआ। आपसे निवेदन है कि कृपया मुझे कुछ पुराने अंक प्रेषित कर कृतार्थ करें। और अपनी mailing list में मेरा address सम्मिलित कर मुझे हर अंक से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान करें। आपका धन्यवाद

राशिद - 13/2/16

---

उत्तराखण्ड                    दिनांक 04-06-2015

महोदया,

निवेदन है कि मैं 'जल-चेतना' का वर्ष 2012 से नियमित पाठक हूँ। पत्रिका मुझे लगातार प्राप्त हो रही है। जीवविज्ञान प्रवक्ता होने के नाते पत्रिका की विषय सामग्री विद्यालय के छात्र/छात्राओं, अध्यापकों में जल सम्बन्धी सभी समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट कर उन समस्याओं के निराकरण की प्रेरणा प्रदान कर रही है। मैं विद्यालय में हरित सेना क्लब (Eco. Club) का प्रभारी हूँ अतः Eco-club के माध्यम से भी हम जल संरक्षण, जल प्रदूषण, जल का समुचित उपयोग, वृक्षारोपण, कुआं, तालाब, नदी, झील के निर्माण एवं संरक्षण, जल का पुर्नउपयोग आदि विषय वस्तुओं की जानकारी छात्रों को व उनके माध्यम से समाज को देने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। आशा है आपका और हम सब का यह प्रयास एक दिन अवश्य रंग लायेगा।

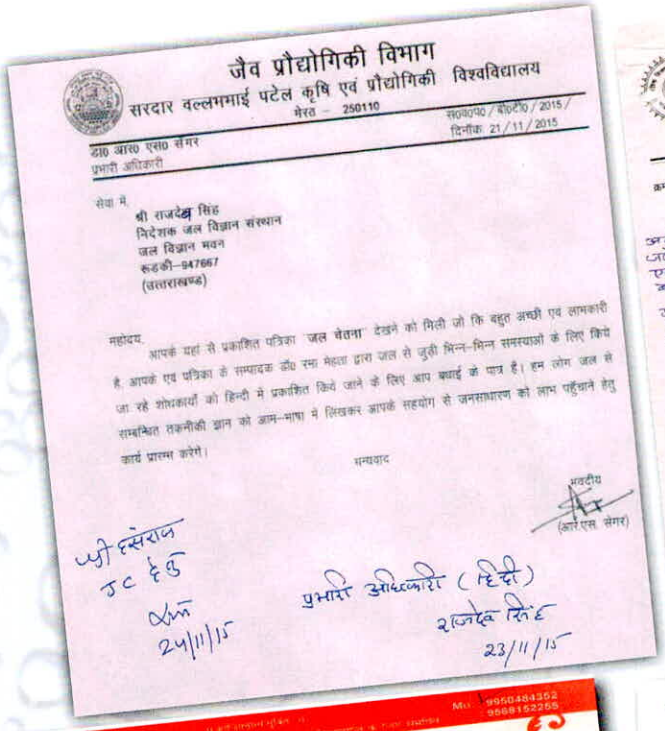

## जैव प्रौद्योगिकी विभाग
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
मेरठ - 250110

डा० आर० एस० सेंगर
प्रभारी अधिकारी

स०व०प०/बी०टी०/2015/
दिनाँक 21/11/2015

सेवा में,
श्री राजदेव सिंह
निदेशक जल विज्ञान संस्थान
जल विज्ञान भवन
रूड़की–247667
(उत्तराखण्ड)

महोदय,

आपके यहां से प्रकाशित पत्रिका 'जल चेतना' देखने को मिली जो कि बहुत अच्छी एवं लाभकारी है. आपके एवं पत्रिका के सम्पादक डॉ० रमा मेहता द्वारा जल से जुड़ी भिन्न–भिन्न समस्याओं के लिए किये जा रहे शोधकार्यों को हिन्दी में प्रकाशित किये जाने के लिए आप बधाई के पात्र हैं। हम लोग जल से सम्बन्धित तकनीकी ज्ञान को आम–भाषा में लिखकर आपके सहयोग से जनसाधारण को लाभ पहुँचाने हेतु कार्य प्रारम्भ करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय
(आर.एस. सेंगर)

प्रभारी अधिकारी (हिंदी)
राजदेव सिंह
23/11/15

श्री हंसराज
JC हेतु
24/11/15

---

॥ ओ३म् ॥ मो० 09463428299

## वैदिक शिक्षा परिषद फाजिलका
शास्त्री भवन, 4-E, कैलाश नगर,
फाजिलका-152 123 (पंजाब)

तिथि 14/7/14

क्रमांक ........

सम्माननीय महोदय,
सादर नमस्ते!

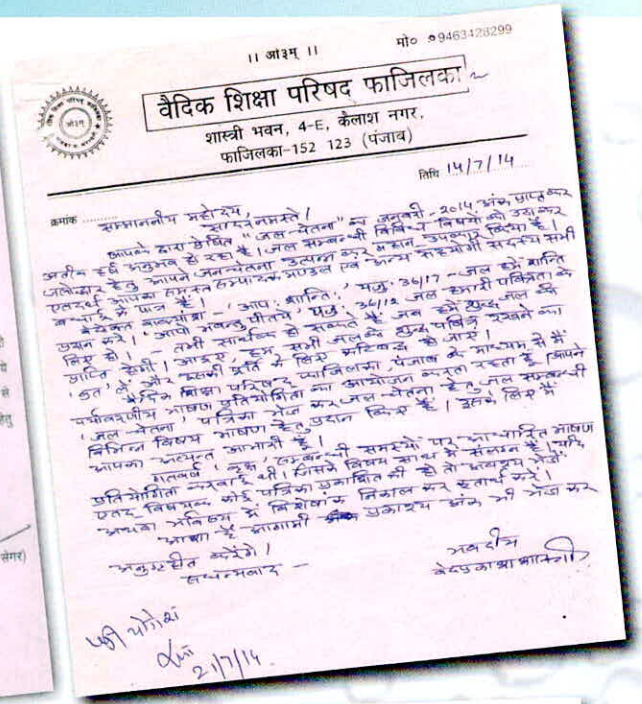

आपके द्वारा प्रेषित "जल-चेतना" का जनवरी-2014 अंक प्राप्त कर अतीव हर्ष अनुभव हो रहा है। जल सम्बन्धी विविध विषयों को उजागर कर जलोद्धार हेतु आपने जन-चेतना उत्पन्न करके महान उपकार किया है। एतदर्थ आपका समस्त सम्पादक मण्डल एवं अन्य सहयोगी सदस्य सभी बधाई के पात्र हैं। ... 'आप: शान्ति:' यजु. 36/17 – जल हमें शान्ति प्रदान करे। 'आपो भवन्तु पीतये' यजु. 36/12 जल सारी पवित्रता के लिए हो। – तभी सार्थक हो सकते हैं जब हम शुद्ध जल को शुद्ध पवित्र रखने का प्रयास करें। आइए, हम सभी जल के प्रति ... जाएं। 'व्रत' लें और इसकी पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध हों ... वैदिक शिक्षा परिषद फाजिलका, पंजाब के माध्यम से मैं ... प्रतियोगिता का आयोजन करता रहता हूँ। आपने पर्यावरणीय भाषण प्रतियोगिता हेतु जल-चेतना ... 'जल-चेतना' पत्रिका भेज कर ... प्रदान किए हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ। विभिन्न विषय भाषण हेतु ... जल सम्बन्धी समस्याओं पर आधारित भाषण प्रतियोगिता करवाई थी। जिसके विषय साथ में संलग्न हैं। यदि एतद् विषयक कोई पत्रिका प्रकाशित की हो तो अवश्य भेजें। आपका भविष्य में विशेषांक निकाल कर कृतार्थ करें। आशा है आगामी प्रकाश्य अंक भी भेज कर अनुगृहीत करेंगे।

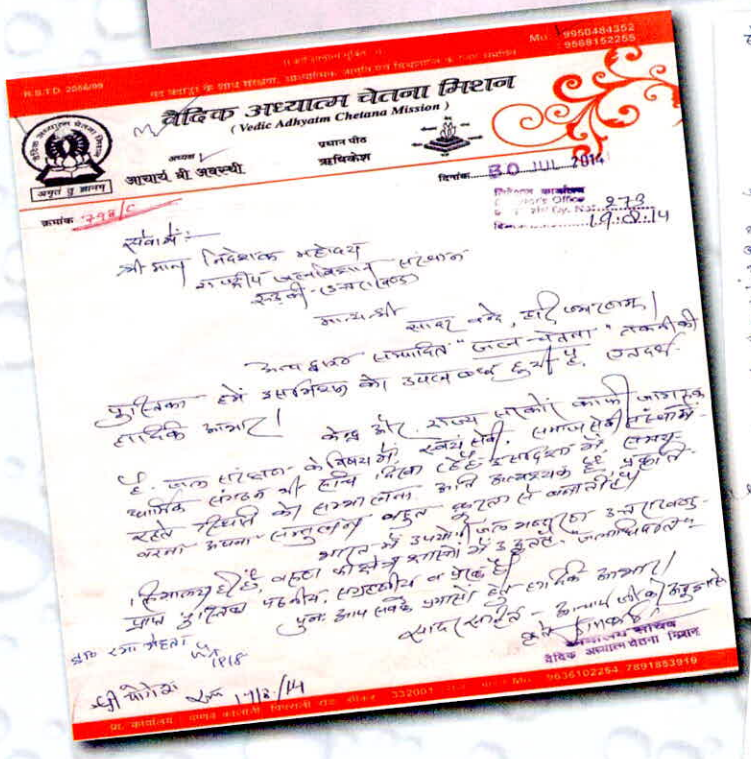

धन्यवाद –

भवदीय
वेदप्रकाश शास्त्री

श्री योगेश
21/7/14

---

## वैदिक अध्यात्म चेतना मिशन
(Vedic Adhyatm Chetana Mission)

R.S.T.D. 2066/09
Mo. 9950484352, 9568152255

अध्यक्ष
आचार्य श्री अवस्थी

प्रधान पीठ
ऋषिकेश

दिनांक 30 JUL 2014

क्रमांक 798/C

निदेशक कार्यालय
Director's Office
Rec. No. 273
Date 19.8.14

सेवा में:–
श्री मान् निदेशक महोदय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रुड़की-उत्तराखण्ड

मान्यवर
सादर वन्दे, हरि ओम तत्सत्।

आप द्वारा सम्पादित "जल-चेतना" तकनीकी पुस्तिका हमें प्रशिक्षण को उपलब्ध हुई है. एतदर्थ हार्दिक आभार! केन्द्र और राज्य सरकारें काफी जागरूक हैं. जल संरक्षण के विषय में, स्वयंसेवी, समाजसेवी संस्थायें, धार्मिक संगठन भी ... प्रकृति ... अत्यावश्यक है ... रहने ... वर्षा ... भारत में उपयोगी जल ... हिमालय ... प्राप्त ... पठनीय, संग्रहणीय व प्रेरक है। पुनः आप सबके प्रयासों हेतु हार्दिक आभार! सादर सप्रेम – ...

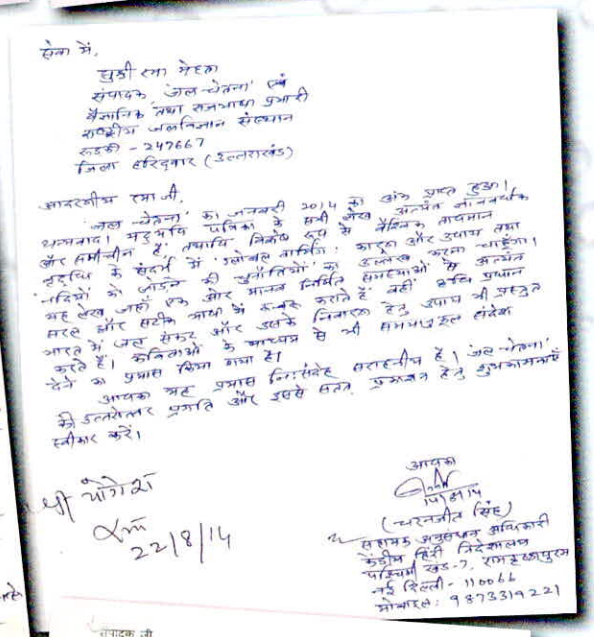

महासचिव
वैदिक अध्यात्म चेतना मिशन
Mo. 9636102254, 7891853919

डॉ० रमा मेहता
1818

श्री योगेश 1/12/14

---

सेवा में,
सुश्री रमा मेहता
संपादक 'जल-चेतना' एवं
वैज्ञानिक तथा राजभाषा प्रभारी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रुड़की - 247667
जिला हरिद्वार (उत्तराखंड)

आदरणीय रमा जी,

'जल-चेतना' का जनवरी 2014 का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। यद्यपि पत्रिका के सभी लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक और समीचीन हैं, तथापि विशेष रूप से वैश्विक तापमान वृद्धि के संदर्भ में 'ग्लोबल वार्मिंग: कारण और उपाय' तथा 'नदियों को जोड़ने की चुनौतियों' का उल्लेख करना चाहूँगा। यह लेख जहाँ एक ओर मानव निर्मित समस्याओं से अवगत कराते हैं वहीं इनके निवारण हेतु उपाय भी प्रस्तुत करते हैं। कविताओं के माध्यम से भी सरल और सटीक भाषा में भारत में जल संकट और उसके ... संदेश देने का प्रयास किया गया है।

आपका यह प्रयास निःसंदेह सराहनीय है। 'जल-चेतना' की उत्तरोत्तर प्रगति और इसके सतत प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

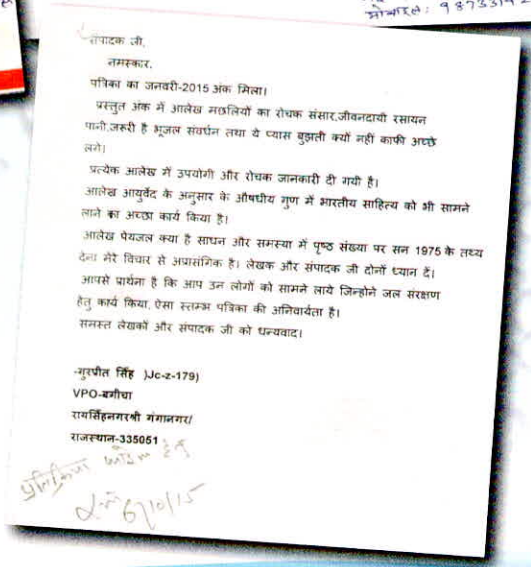

आपका
(चरनजीत सिंह)
15/8/14
सहायक अनुसंधान अधिकारी
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली - 110066
मोबाइल: 9873319221

श्री योगेश
22/8/14

---

संपादक जी,

नमस्कार,

पत्रिका का जनवरी-2015 अंक मिला।

प्रस्तुत अंक में आलेख मछलियों का रोचक संसार,जीवनदायी रसायन पानी,जरूरी है भूजल संवर्धन तथा ये प्यास बुझती क्यों नहीं काफी अच्छे लगे।

प्रत्येक आलेख में उपयोगी और रोचक जानकारी दी गयी है।

आलेख आयुर्वेद के अनुसार के औषधीय गुण में भारतीय साहित्य को भी सामने लाने का अच्छा कार्य किया है।

आलेख पेयजल क्या है साधन और समस्या में पृष्ठ संख्या पर सन 1975 के तथ्य देना मेरे विचार से अप्रासंगिक है। लेखक और संपादक जी दोनों ध्यान दें।

आपसे प्रार्थना है कि आप उन लोगों को सामने लाये जिन्होने जल संरक्षण हेतु कार्य किया. ऐसा स्तम्भ पत्रिका की अनिवार्यता है।

समस्त लेखकों और संपादक जी को धन्यवाद।

-गुरप्रीत सिंह )Jc-z-179)
VPO-बगीचा
रायसिंहनगरश्री गंगानगर/
राजस्थान-335051

प्रतिक्रिया कॉलम हेतु
6/10/15

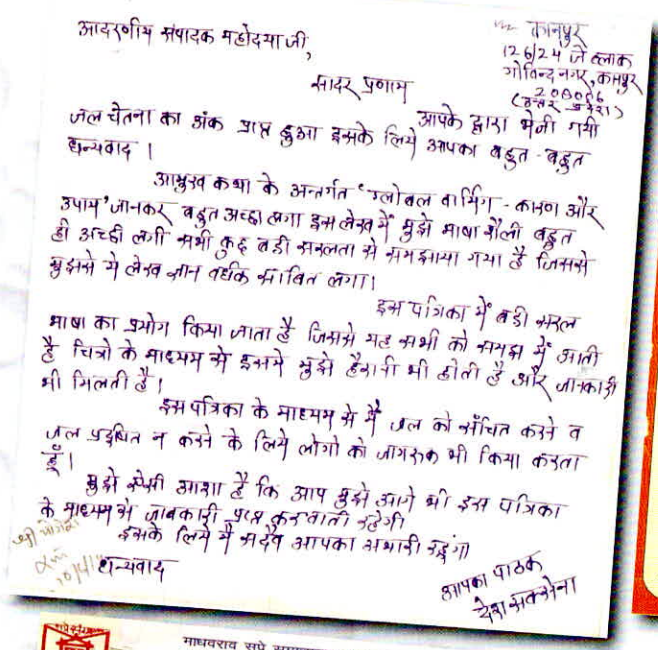

कानपुर
12 6/24 जे ब्लाक
गोविन्द नगर, कानपुर
208006
(उत्तर प्रदेश)

आदरणीय संपादक महोदया जी,

सादर प्रणाम

जल चेतना का अंक प्राप्त हुआ इसके लिये आपके द्वारा भेजी गयी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

आमुख कथा के अन्तर्गत 'ग्लोबल वार्मिंग - कारण और उपाय' जानकर बहुत अच्छा लगा इस लेख में मुझे भाषा शैली बहुत ही अच्छी लगी सभी कुछ बड़ी सरलता से समझाया गया है जिससे मुझसे ये लेख ज्ञान वर्धक साबित लगा।

इस पत्रिका में बड़ी सरल भाषा का प्रयोग किया जाता है जिससे यह सभी को समझ में आती है चित्रों के माध्यम से इससे मुझे हैरानी भी होती है और जानकारी भी मिलती है।

इस पत्रिका के माध्यम से मैं जल को संचित करने व जल प्रदूषित न करने के लिये लोगों को जागरूक भी किया करता हूँ।

मुझे ऐसी आशा है कि आप मुझे आगे भी इस पत्रिका के माध्यम से जानकारी प्राप्त करवाती रहेंगी इसके लिये मैं सदैव आपका आभारी रहूंगा

धन्यवाद

आपका पाठक
देश सक्सेना

---

स्थापक - गुरुजी विजय आर्य 'स्नेही' स्थापना वर्ष - 2004

साहित्य, कला, संस्कृति एवं समाज सेवा को समर्पित

# सम्मान समिति बैतूल (म.प्र.)

## अभिनन्दन-पत्र

श्री/श्रीमती डॉ. रमा मेहता निवासी रुड़की

आपके साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों द्वारा समाज का हित हुआ है भविष्य में भी आपकी सेवाओं से समाज लाभान्वित होगा, इसी आशा और विश्वास के साथ आपके शारीरिक, सामाजिक, धार्मिक व राष्ट्रीय उन्नति के पथ पर प्रगति- शीलता के साथ-साथ 'स्नेही' अभिनन्दन करते है।

दिनांक : 26.9.2014 शुभकामनाओं सहित
स्थान : बैतूल

अध्यक्ष
गुरुजी विजय आर्य 'स्नेही'
समाज सेवी/वैदिक धर्म प्रचारक

संयोजक
रामचरण यादव
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)

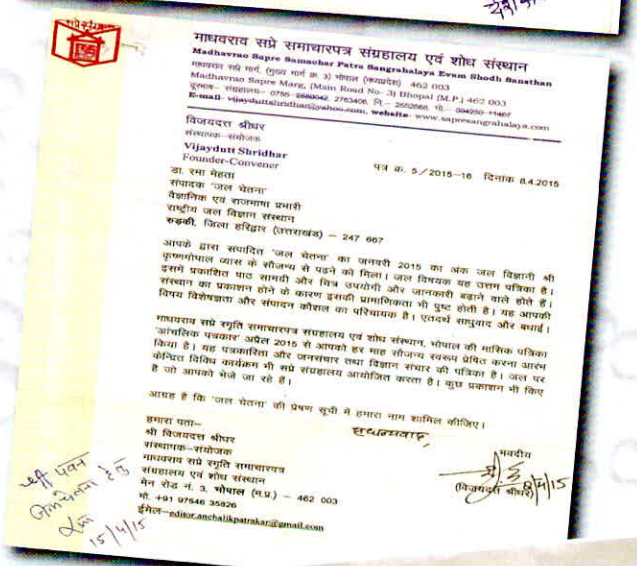

---

माधवराव सप्रे समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान
Madhavrao Sapre Samachar Patra Sangrahalaya Evam Shodh Sansthan
माधवराव सप्रे मार्ग, (मुख्य मार्ग क्र. 3) भोपाल (मध्यप्रदेश) 462 003
Madhavrao Sapre Marg, (Main Road No- 3) Bhopal (M.P.) 462 003
दूरभाष- संग्रहालय- 0755- 2660042, 2763406, नि.- 2552566, मो.- 094250-11467
E-mail- vijaydutta shridhar@yahoo.com, website- www.sapresangrahalaya.com

विजयदत्त श्रीधर
संस्थापक-संयोजक
Vijaydutt Shridhar
Founder-Convener

पत्र क्र. 5/2015-16 दिनांक 8.4.2015

डा. रमा मेहता
संपादक 'जल चेतना'
वैज्ञानिक एवं राजभाषा प्रभारी
राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान
रुड़की, जिला हरिद्वार (उत्तराखंड) – 247 667

आपके द्वारा संपादित 'जल चेतना' का जनवरी 2015 का अंक जल विज्ञानी श्री कृष्णगोपाल व्यास के सौजन्य से पढ़ने को मिला। जल विषयक यह उत्तम पत्रिका है। इसमें प्रकाशित पाठ सामग्री और चित्र उपयोगी और जानकारी बढ़ाने वाले होते हैं। संस्थान का प्रकाशन होने के कारण इसकी प्रामाणिकता भी पुष्ट होती है। यह आपकी विषय विशेषज्ञता और संपादन कौशल का परिचायक है। एतदर्थ साधुवाद और बधाई।

माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल की मासिक पत्रिका 'आंचलिक पत्रकार' अप्रैल 2015 से आपको हर माह सौजन्य स्वरूप प्रेषित करना आरंभ किया है। यह पत्रकारिता और जनसंचार तथा विज्ञान संचार की पत्रिका है। जल पर केन्द्रित विविध कार्यक्रम भी सप्रे संग्रहालय आयोजित करता है। कुछ प्रकाशन भी किए हैं जो आपको भेजे जा रहे हैं।

आग्रह है कि 'जल चेतना' की प्रेषण सूची में हमारा नाम शामिल कीजिए।

सधन्यवाद,

भवदीय
(विजयदत्त श्रीधर) 8/4/15

हमारा पता–
श्री विजयदत्त श्रीधर
संस्थापक–संयोजक
माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र
संग्रहालय एवं शोध संस्थान
मेन रोड नं. 3, भोपाल (म.प्र.) – 462 003
मो. +91 97546 35826
ईमेल–editor.anchalikpatrakar@gmail.com

श्री पवन जलचेतना हेतु
15/4/15

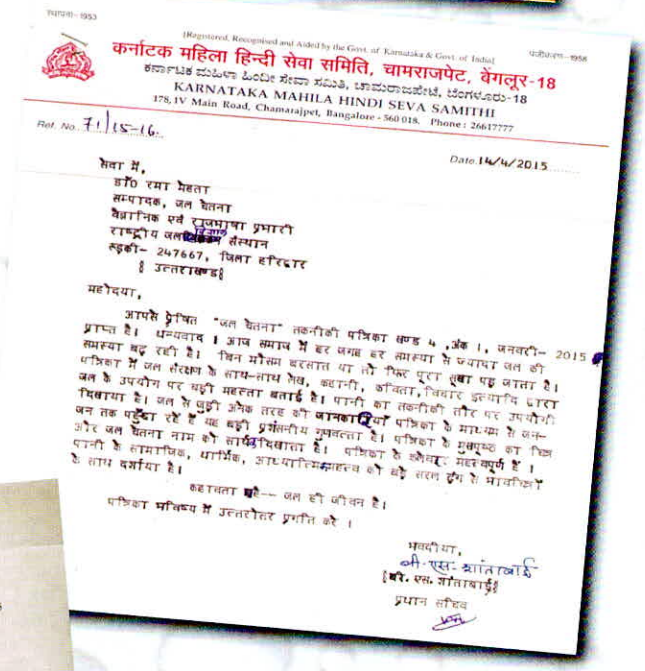

---

स्थापना-1953

(Registered, Recognised and Aided by the Govt. of Karnataka & Govt. of India) पंजीकरण-1958

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलूर-18
ಕರ್ನಾಟಕ ಮಹಿಳಾ ಹಿಂದೀ ಸೇವಾ ಸಮಿತಿ, ಚಾಮರಾಜಪೇಟೆ, ಬೆಂಗಳೂರು-18
KARNATAKA MAHILA HINDI SEVA SAMITHI
178, IV Main Road, Chamarajpet, Bangalore - 560 018. Phone : 26617777

Ref. No. 71/15-16.

Date 14/4/2015

सेवा में,
डॉ० रमा मेहता
सम्पादक, जल चेतना
वैज्ञानिक एवं राजभाषा प्रभारी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रुड़की– 247667, जिला हरिद्वार
{ उत्तराखण्ड }

महोदया,

आपसे प्रेषित "जल चेतना" तकनीकी पत्रिका खण्ड 4, अंक 1, जनवरी– 2015 प्राप्त है। धन्यवाद। आज समाज में हर जगह हर समस्या से ज्यादा जल की समस्या बढ़ रही है। बिन मौसम बरसात या तो फिर पूरा सूखा पड़ जाता है। पत्रिका में जल संरक्षण के साथ-साथ लेख, कहानी, कविता, विचार इत्यादि द्वारा जल के उपयोग पर बड़ी महत्ता बताई है। पानी का तकनीकी तौर पर उपयोगी दिखाया है। जल से जुड़ी अनेक तरह की जानकारियाँ पत्रिका के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा रहे हैं यह बड़ी प्रशंसनीय गुणवत्ता है। पत्रिका के मुखपृष्ठ का चित्र और जल चेतना नाम को सार्थक दिखाता है। पत्रिका के सभी महत्वपूर्ण हैं। पानी के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक महत्व को बड़े सरल ढंग से भावनाओं के साथ दर्शाया है।

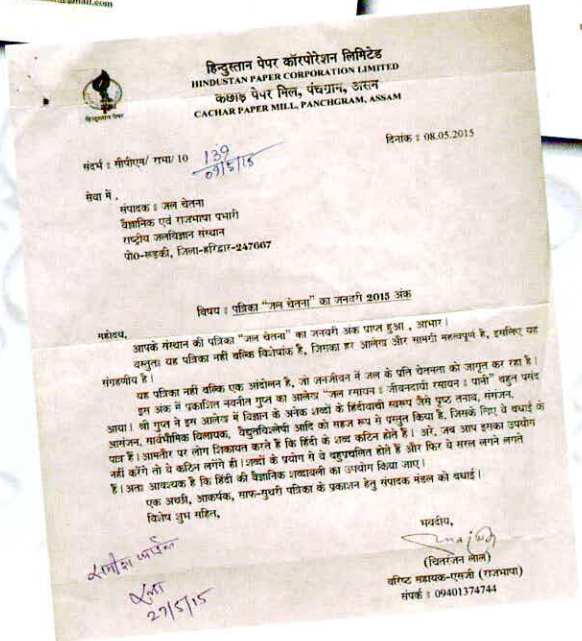

कहावत है-- जल ही जीवन है।
पत्रिका भविष्य में उत्तरोत्तर प्रगति करे।

भवदीया,
बी. एस. शांताबाई
{बी. एस. शांताबाई}
प्रधान सचिव

---

हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड
HINDUSTAN PAPER CORPORATION LIMITED
कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम, असम
CACHAR PAPER MILL, PANCHGRAM, ASSAM

दिनांक : 08.05.2015

संदर्भ : सीपीएम/ राभा/ 10

139
07/5/15

सेवा में,
संपादक : जल चेतना
वैज्ञानिक एवं राजभाषा प्रभारी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
पो0-रुड़की, जिला-हरिद्वार-247667

विषय : पत्रिका "जल चेतना" का जनवरी 2015 अंक

महोदय,

आपके संस्थान की पत्रिका "जल चेतना" का जनवरी अंक प्राप्त हुआ, आभार। वस्तुतः यह पत्रिका नहीं बल्कि विशेषांक है, जिसका हर आलेख और सामग्री महत्वपूर्ण है, इसलिए यह संग्रहणीय है।

यह पत्रिका नहीं बल्कि एक आंदोलन है, जो जनजीवन में जल के प्रति चेतनता को जागृत कर रहा है। इस अंक में प्रकाशित नवनीत गुप्त का आलेख "जल रसायन : जीवनदायी रसायन : पानी" बहुत पसंद आया। श्री गुप्त ने इस आलेख में विज्ञान के अनेक शब्दों के हिंदीवाची स्वरूप जैसे पृष्ठ तनाव, संसंजन, आसंजन, सार्वभौमिक विलायक, वैद्युतविश्लेष्य आदि को सहज रूप से प्रस्तुत किया है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। आमतौर पर लोग शिकायत करते हैं कि हिंदी के शब्द कठिन होते हैं। अरे, जब आप इसका उपयोग नहीं करेंगे तो ये कठिन लगेंगे ही। शब्दों के प्रयोग से वे बहुप्रचलित होते हैं और फिर वे सरल लगने लगते हैं। अतः आवश्यक है कि हिंदी की वैज्ञानिक शब्दावली का उपयोग किया जाए।

एक अच्छी, आकर्षक, साफ-सुथरी पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

विशेष शुभ सहित,

भवदीय,
(चितरंजन लाल)
वरिष्ट सहायक-एसजी (राजभाषा)
संपर्क : 09401374744

27/5/15